

श. १
ॐ श्रीगुरुवे नमः ॐ श्रीगुरुं पर-
मानन्दं वन्दे स्थानं तद्विशुद्धम् य-
स्य सन्निधिमात्रेण विद्वानन्दं यते वा-
युः १ टीका मैत्रस्य श्रीगुरुको ना-
मस्कारकर्ता हं जो ज्ञानेन्दुमूर्ति है ॐ
२ जिसके दर्शन मात्र से विद्वानन्द रू-

प प्राप्त हो जाता है १

गोरक्षशतकं वन्द्ये भवपाशवि-
मुक्तये आत्मबोधकरं प्रेमसो विवे-
हारकञ्चिकाम् २

गोरक्षशतकनामशास्त्र आत्मबो-
धकरणीवाला तथा विचारहारकी

५०
श. २ ^{कां स} जं नीरूपकरनाहं संसारपाशके
छूटनेवाले २

यदा स लीयते प्राणो मृतं संच वि
लीयते तदा समस्तं हि समाधि
रभिधीयते ३

जव प्राण तथा संकल्प लय होते।

हे तव जीव ब्रह्म ऐक्य होता है वा
ही समाधी नाम है ३ ॥

यत्समत्पंद्यो रज जीवात्म परमा
त्मनोः स सर्वं नष्ट संकल्पः समा
धिरभिधीयते ३ ॥

जो समभाव अर्थात् ऐक्य जीव गैर

श.
३

परमात्मा को है उसी सब संकल्पन
होके समीप कर लाते है ५
एतद्दिशुक्ति सो पान मे न काल।
एवंच नम यद्वावर्त्य मनो भोगा
ह्यसक्तिः परमात्मनि ५
इही मोक्ष की पौरी है तथा काल की।

वाजी देनी है जो वित्त को भोगों से वि।
मुक्ति राखना और परमात्मा के समुत्प।
करणा है ॥५॥

ध्यात ध्याने परित्यज्य क्रमं च है त गो
चरम् निवान् देशपवायिनं समा।
धिः सोभिषीयते ॥६॥

श.
५

प्राप्तान्तथाप्राप्ततागके तथाह्ये।
तगोचरक्रमत्यागके केवल एक रूप
में स्थित होना वा पुरहित दीपन्यायी
अर्थात् निष्कल सद्रूप रत्न समा
धी होती है ६ ॥
द्विज सेवित शाखस्य अतिकल्प

तरोः फलम् शमनं भवतापस्य
योगं जनसज्जनाः ॥
हे सज्जन योगाभ्यासक सेवन कर
योग वेदनाम कल्पवृत्त का फल है
जिस वेद के शाखा ब्रह्म लोक सेवन
कर्ते हैं तथा संसारताप के शांती क

श.
५

रनेवाला है ॥५॥
आसने प्राण से रोधः प्रत्याहारश्च
प्राणा प्याने समाधिरेतानि यो॥
गाह्नि भवन्ति षट् ॥
अ० योगाभ्यासकानिर्णयलिखिते है
योग के लगे हैं वे ॥ इह श्लोक सार्थ है

आसना तिस्र तावन्ति यावन्ति जीव
जांतयः एतेषामः स्थितान्भेदानि
ज्ञातानि महेश्वरः ॥
जितनी जीव जाती है उतने ही आस
न हैं सब भेद आसनों के महेश्वर ज्ञा
ते हैं ॥ चतुराशी तिलतण्ण

श.
६

मेकमेकमुद्रारुतम् नतः शिवे
नपीयानोषेऽशोनेशनेकतम् ॥
चौरासीलतजातीकोअलगअल
गआसनहैं अन्नैसिशिवजीनेचौ।
रासीसंतेयकियेहैं १०
आसनेभ्यः समस्तेभ्योद्वयमेवमुद्रा

रुतम् एकंसिद्धासनंप्रोक्तं हि।
तीयंकमलासनम् ॥
सवआसनमैसेदोयीआसनप्रथा।
नहैं एकसिद्धासन दूसराकमला
सनहैं ॥ अथआसननिर्णयकरतेहैं
योनिस्थानकमंत्रिमूलचटितं क

शु

त्वाहृष्टं विन्यसी न्नेष्टे पादम।
यैकवस्तुदयेकत्वासमं विग्रहम्
स्याणः संयमितेन्द्रियोचलदृशा
पश्यन्नुचोरन्तरं चैतन्मोक्षक।
वाटभेदजनने सिद्धासनं प्रोच्यते
यो निस्थानकोत्तरी सेवन्ध करणा।

हसराणादलिंगपरदृष्टरत्नना देहा
हृदयविषयसी हारत्नना निश्चलत
याग्रहीतेन्द्रियलोकर अचलदृष्टी
सेधूमणकोदेवना इही मोक्षद्वारा
लोत्तनेवाला सिद्धासनकरते हैं ॥
वामोरूपरिदतिणंचचरणं संस्था

श.
२

पुनः समंतथा याम्योरुपरितः स
वन्धविधिना कृत्वा करभ्यां दृष्टौ
अंगुष्ठौ रुदयेति धाय चिबुकं ना।
साग्रमा लोकायन एतद्व्याधिवि
कारहारि यमिनां यमासनं प्रो।
च्यते ॥ ॥

वामपटविषयदक्षिणापादनया द
क्षिणापटविषयवामपादरत्नना
सुवंधविधिसे अंगुष्ठदृष्टरत्नने ज्ञा
ते विषयचिबुक रत्नना नासाग्रवि
षयदृष्टी रत्नी रक्षी रोगविकार
नाशी यमासनक हलाने है ॥

शु.
२

अवशाणाया मनिर्णयलिते है
आधार प्रथमं चक्रं स्वाधिष्ठाने
द्वितीयकम् योनिस्थाने ह्यो
र्मध्ये कामरूपो निरायते ॥

आधारचक्रप्रथमं है स्वाधिष्ठानच
क्रहसरा है दोनूँके मध्ययोनिचा

क कामरूप है ॥ १५ ॥

आधारख्यं गुह्यस्थाने पंचकजं च च
तर्दलम् तन्मध्ये प्रोच्यते योनिः
कामाख्या सिद्धवेदिता ॥

आधारचक्रनामगुह्यस्थानमें चत
र्दल है उसमें कामनामयोनिचक्र।

श.
१०

सिद्धोनेनरस्काः स्त्रियादृषाहे १५

योनिमथेमहालिंगं यश्चमाभि

मुखे स्थितम् मस्तके मणिव।

द्विने योजानाति स योगवित् ॥

योनि के मथ विषय पश्चम मुखमा

हालिंग है जिसके मस्तक में मणिके

न्यायी छेद है इसलिंग को जानने वा
ला योगी होता है ॥ १६ ॥

तम चामीकराकारं तद्विलेखेव

विस्फुरत् चतुरश्रं पुरं तद्देहार्थं

मेघास्य निश्चितम् ॥

अग्नि से तपाये दृश्ये सोने के रूप तथा।

मे० तदित्केरेखान्यायीप्रकाशमानओ०
श० चौखोंदश्रिकागरलिंगकेनीचेहै ॥

स्वशास्त्रेनभवेत्प्राणोऽधिष्ठानंयतः।
तद्वयम् स्वाधिष्ठानाख्यानसमा
न्नेष्टमेवाभिधीयते ॥ ॥

स्वाधिष्ठानशब्दकाअर्थसोनो स्वा

नामप्राणहै अधिष्ठाननामआधार
है अर्थात् प्राणकाआधारहै स्वाधि
ष्ठानकाप्रयोजनलिंगस्थानहै ॥
तन्त्रनामणीवत्प्रोक्तोयत्र^कचनःस
धुर्माया तन्नाभिमणलेचक्रंयो॥
चतेमणीपूरकम् ॥ ॥

50
गो
श.
११

मणिप्रकनामचक्रनाभिस्थानमें
है जिसमें वृक्षसमूहमणिनाभीस्था
मिकरही है जैसा सूत्ररत्नमें व्या
मिकर्ता है ॥ ॥

द्वादशारेमहाचक्रके पुण्यपापवि
वर्जिते तावजीवोभयमन्येवया

वतत्पलविनृति २॥

महाप्रणम द्वादशारत्नमहाचक्रमें
तवतकजीवफितैरहता है जवतः
कसरूपकोनहीपैछान्ता है २॥
ऊर्ध्वमेष्टादधोनाभेः क्षीनृयोनिः
स्वगासवन मचनामः ससुता

ने
माः सहस्राणि द्विसप्ततः ॥

क
कीयोनीलिंगके ऊपर नाभी के
पंजी के शंटे के न्यायी उमी
जन्म से बहतर हजार नाडी उत्पन्न भये हैं
तेषु नाडी सरसेषु द्विसप्ततिरुह
रताः प्राधान्यात्प्राणावाहिन्यो

भूयस्तत्र दशास्रताः ॥

उमनाडी सरसों में बहतर नाडी का
है है उनमें दस नाडी प्राणों के बला
नेवाले प्रधान के ये हैं ॥ ॥

इति च पिंगला चैव सप्तसु समाचक्षते
नीयका गान्धारी हस्तिनिहा

वपुषा चैव यशस्विनी ॥ ३२ ॥
 लससा ऊरुमैव शोखिनी दा
 शमी सता पतनारिमयं च।
 कंतातव्यं योगिनः सदा ॥ ३३ ॥
 ३३ शोखिनी त कटसना शीकेना
 महे ३३ नही नारियो के चक्र को यो।

गीते जानना चहे ॥ ३४ ॥

सततं प्राणवाहिन्यः सूर्यसोमा
 शिदैवताः पिंगलासुषुम्णा।
 अतिसोनामः प्रकीर्तिताः ॥ ३५ ॥
 तीननाशि प्राण के चलाने वाले हैं
 ३५ पिंगला सुषुम्णा तिनके देवताः

गो
श.
२५

सूर्यचंद्रमाग्रिहें २५

इडावामेस्थिताभागेपिंगलादति

होमता सुषुम्णामध्यदेशेनप्रा

णमार्गाः प्रयाः सयाः २६

इडावामभागमैपिंगलादतिणामैसु

षुम्णादोन्मूकेवीचमै प्राणोंकोचला

तेहें २६ ॥

प्राणोऽपानःसताक्षोद्योदानो

द्यानश्चवायवः सगःकुर्मोथ

ककरोदेवदत्तोपनेजयः २७ प्रा

णायःपंचविद्यातानागायाः

पंचवायवः नागोऽरुह्याति

पंचैताङ्गमर्माङ्गीलयेत्युतः १२
तत्तिकरोति कुरुकरोदेवदोमे
विज्जम्भते भूतेष्वनेजयः शब्दे
नागाः प्रायः पंचवायवः १५
दसप्राणकहतेहं प्राण^अपानस
मानउदानचान नागकर्म कुरुकर

देवदत्तदत्तनंजय श्रीरामहं पदलेपा
दुंकोनोप्राणनामसेव्याननामता
कहं नागनामाप्राणपकरखिता
है कर्मनामप्राणफेरच्छोउताहै क
करनामाच्छिकाकोकर्ताहै देवद
ननामाउभासीकर्ता पनेजयनामा

प्राणशक्तौ है २५

एवेनादिषु सर्वा सुवितरन्ति सः

मन्त्रतः प्राणायानवशोजी।

वोस्यथस्योर्ध्वप्रसर्यति ३०

इसीपारी तरह सबनादियोमें प्राण
फिरतेहैं जीव प्राणायानकेवससे

लोहदायनी अस्याः संकल्पमा
त्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते नाना।
या सदृशी निष्पन्नानाया सदृ
शो नयाः अनया सदृशं पुण्यं
न भूतो न भविष्यति ऊहाति।
न्योऽसमुद्रताया यत्रो प्राणापारि

विशेषतः हंसहंसेति मंत्रं च जी

वोजपति सर्वदा ३५ ॥

हकारसे वहिर्ज्ञा सकारसे भीत
रज्ञाता हंसहंसरही मंत्रजीवसह
जे जपता है ३५

अजपानामगायत्री योगिनां ।

वामभागतया दक्षिणभागमें जीव
प्रकटनही देखते हैं जैसा कन्दको
कोवालक हाथसे चलाते हैं जैसा
प्राणायामके वलसे जीव चंचल हो
ता है और सीना लें जैसा वायुका

गो
शुं
१५

जीव प्राणसेवान्वाहोवा जीव प्राणा
पानसेवीचा जाताहे और प्राण अया
नकोलीचता अयान प्राणकोली
चताहे एक ऊपर एक नीचे स्थित है
जो दोनू को जाने सो योगी है ३३
अचिर्या नि सकारेण

श्री प्रणवावापहरणम्
स्तोत्रेतिमयोगवित् ३३।
इहीज्जपानाममायरीह योगी।
हंकोमोतदेनीवाली ३सकेसं
त्यमायसेसुचपापं सिद्धमाह ३
सकेतल्यकोयीजपशिवयोगी

गो
श'
२

है और कोयी पदार्थ इस जैसा शुद्ध न
भना ना भनेगा ऊरालिनी विषय
रहगा यत्री उत्पन्न है प्राणों के धार
ण करणे वाली तथा पापनष्ट क
रण वाली तथा ओंकार जिसके
शक्ति में है इसको जानने वाला

योगी कहलाता है ३॥

क
नोर्वीज्जाली शक्ति र
सुधा ऊराली कृता ब्रह्मदा
र सुखे निमग्न सुखे नाहृत्यति
इति येन मार्ग एतेन च
सहारे निरामयम् सुखेना

गो.
शा.
२२

स्वायत्तद्वारेप्रसमापरमी
सरी ३५
ऊर्णिलीशक्तिआहृषेबबाली
सर्पकेम्यायीहै ब्रह्मद्वारकार
सत्ता अपभेमुवसेरोकलेकर
भेटीहै गौरसुतीहै ३६शक्तीवी

एकपरमेस्वरीहै ३५ ॥
३५ ब्रह्मावद्वियोगेनमनसासारु
त जाहता सूचीवश्रणमादायव
हृत्पूर्यसुप्रमया ४
३६ नि एलीवद्वियोगसे जागतीहै ३
१ नै मनकीदृष्टिभावसेतथाप्राणके

गो
श'
२३

हलाचनेसेजागतीहै जैसासूर्या
सूर्यकोलेचलतीहै तैसारु
मानाडीऊएलीकोऊपर
सेसीधाकरचलातीहै ४१ ॥ १
उद्धाटयेत्कवाटेतयथाऊंवि
कयारुहान् ऊएलिन्यातथा

योगीमोतहारंप्रभेदयेत् ४१
प्रचलदुजगाकारणमत
भाषुभा प्रवृद्धावहियोगेनव
जन्मधंसुषमाया ४२ ॥

निसतरहकवाटकोऊंजीसेलोला
तैहें उसीतरहयोगीमोतहारकोऊं

गो
श
२५

एलिनेकेअभाससेखिलताहै औ
रऊएलिनीकासदृषकरकेतरकरच
जातीहै ४२ ॥

कृत्वासंचरितौकारौदृष्टनरेव
हाथवजासनम् गाछंवतसि
सनिपायविबुकेप्यानंचनसे।

तसि वारेवारमपानमूर्धमनि
संप्रोष्टालयेत्परिते प्राणमुव
तिबोधमेतिशानकैःशक्तिप्र
भावादनः ॥ ४२ ॥
देनूहाथजोरकरवजासनपरवे
रना औरछातीपरविबुकरवना ।

गो
शा
२५

पानमैमनखना बारबारअणा।
ननामप्राणरुक्लेजाना प्रा।
एतामप्राणधीरजसेपूरणा ३सी
अभ्याससेऊगिलिनीहोलेजागा।
तीहै ५३ ॥
अंगानांसर्देनंशलेअमसे

जानवारिणा कडुमूलवने
न्यागीहीरभोजनमाचरेत् ५५
अंगकोपसीनेकेपानीसेमर्दनक
रणा कटुपदार्थतथाखटानथा
लवनन्यागकेदूधहीदूधलावना
ब्रह्मचारीमिताहारीन्यागीये

गो.
श.
१९

गपरायणः अवाह्यं भवेत्ति
दिनात्रकार्याविचारणा ४५
ब्रह्मचारी रहनाद्योरात्रानात्यागी
रहना एकवरसमैसिद्धभनेगा ३
समैसंशयनरात्रिना ४५ ॥ ३॥
^कनृके ऊपर जो ऊपली शक्तिः शुभामोता

ययोगिनाम् वन्यनायचमूला
नायस्तांवेतिसयोगवित् ॥
^कनृके ऊपर जो ऊपली शक्तिक
ही रही मूर्त को न जानने कर के व
न्यक होती है योगी को सेवन कर
एसे मोक्ष देती है जो इसको जाने ३।

मो
श'
२३

हीयोगीहै ४६ ॥२॥

महामुद्रांनभोमुद्रामुद्रियानेज
लन्धरम् मूलवन्धंचयोवीनि।
सयोगीसिद्धिभाजनम् ॥
महामुद्राकोनयानभोमुद्राकोउरि
यानको नयानलन्धरमुद्राकोनया

मूलवन्धकोजोपेछानेगा उरयो
गीसिद्धिभाजनहोगा ४७ ॥

अपानप्राणयोरैकंतयोमूत्रप
रीयोः पुत्राभवतिवृद्धोपिसन
नेमूलवन्धनान् पर
प्राणयोरअपानकेपेकसेमलमूत्र

कानाशाहोताहै मूलवन्धकेअ
भाससेभूशवीजवानहोताहै ४२
पार्श्वभागेनसंपीअयोनिमा॥
अन्वयेद्दुदम् अयानमूलमा
कृष्णयोनिवन्धोनिगयने ४३
वामदक्षिणपाससेनिपीउकेअरा

संकोचकरणा अयानमूलको
वीचना इहीमूलवन्धहै ४४ ॥
अयानंकरुतेयस्मादविष्टा
न्तोयथावगः उदियानेता
देवस्यतत्रवन्धोनिगयने ४५
जिसकारणाकरकेपंखीकेनरु

मो
श
२५

यीऊइताहै उसकारणकरकेउ
डियानकहेनेहैं तिसकोवान्धना
उदरेपासिसंताभेरपोमेछाय
वतते उडियानजलोवहै।
मृत्युमांतगकीसरी ५
हलंगकेनीचेउदरमेंपश्चिमभा।

गको उडियानजलहोताहै तिसको
वान्धनेसेकालकोजीततेहैं ५९
वरुनतसिराजालमेंथोंगानो
नभोजलम् यातिजालन्धरो।
वंधःकण्टकःखोचनाशनः ५१
नारीजालपरनीचिलगंसेआकाश

गो
श्री
३०

जलवरता है तीसके वान्यने से का
एह उः ख को नाश होता है ५२ ॥

जालन्योर कते वन्ये कएह संकोच
लतण नयी मूषे पतन्य गोन च।
वायुः प्रकृण्यति ५३

जलन्यर वन्य कएह संकोच से होता है

तिसके अभ्यास से अमृत अग्नि में नही
पड़ता है और वायु का कोप नही होता
है ५३ ॥

कपाल ऊहोरे जिह्वा प्रविष्टा विप
रीतगा कुचोरन्त गता दृष्टिर्मुद्रा
भवति विचरी ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

गो
शा
३

मुत्तरं भ्रमैर्जिह्वाकाप्रवेशकरणा भू
मध्यमैर्दृष्टीलगानी रही खेचरी मुद्रा
होती है ५५

नरोगो मरणो न स्य न निद्रा न त्तरा
न त्तरं न च मुद्रा भवेत्तस्य यो मु
द्रां वेति खेचरी ॥ ५५ ॥

मूर्च्छ

खेचरी मुद्रा जाननवाले को नारोग
नामरणाना निद्रा ना त्तरा ना वेदे ५५
चित्तं चरति खेयस्मा जिह्वा चरति
खेगता तेनैव खेचरी मुद्रा सर्व
सिद्धैर्नमस्कृता ॥
खेचर्या मुद्रितं येन विचरं लाम्पिको र्थ

गो
श'
३१

तः नतस्य सरते विन्दुः कामिन्या
शेषितस्य च ५२
जिस कारण करके चित्त और जिह्वा
आकाश में फिरती हैं उसी कारण
करके खेचरी कहते हैं और जिस मु
द्रा को सब सिद्ध नमस्कार करते हैं खेच

री जानने वाले को विन्दु न हो पतित
होता है जेकर कामिनी नाल की आ
लिंग न किया हो ५३
यावद्विन्दुः स्थितो देहे तावन्म
स्यः भयं कृतः यावद्दहानभो
मुद्रा तावद्विन्दुर्न गच्छति च

गो
श.
३३

सितोपि यदा विंदः संप्रामश्य
इताशनम् व्रजतर्धततः पा
न्यानि वदो यो निमुद्रया ५५
जवतकटेहमैविन्दुः स्थितहे तवा
तककालकाभयनही जवतक।
खिचरीवही तवतकविन्दनही पति

तहोवे औरल^अगिमै पश्ताहोवे तवा
यो निमुद्रासे ऊपरवशया जानाहै ५५
समनन्धिविधो विन्दुः पाणरोलो
हितस्तथा पाणरेषु कर्मित्वा
लोहिताल्यं महारजः ६
उहविन्दुः दोषकारकोहै विटाओरला

नो
शा
३५

लविदाशुक्रकरलाताहै लालरा
जकरलाताहै ६।

सिंहरद्वसंकाशंरविस्थाने
स्थितरजः शशिस्थानेस्थितो
विन्दुःस्तयोरक्रोसुडलंभम् ६।

रजलालसिंहरसन्पायीसूर्यस्थानमें ६।

शुक्रवनूस्थानविषयहैदोन्कापे
अडलंभहै ६।

विन्दुःशिवोरजःशक्तिःविन्दुः
रिन्दुरजोरविः उभयोःसंगमा
देवप्राणनेपरमं पदम् ६।

विन्दुःशिवहैरजशक्तिहै विन्दुःचर

गो
श.
१५

माहै तथारजसूर्यहै दोनूँके संग
मसे परमपदकी प्राप्तिहै ६२ ॥

वापुनाशान्ति^{कि}वालेन प्रेरितं त
यदारजः प्राप्तिविन्दोसहै कनं
भवेद्विद्यवपुस्तदा ६३

जब प्राणशान्तिसे रजको प्रेरण कि

यी तब विन्दुको साधये कहा होता है
तवे दिव्यशरीर होता है ६३

शुक्लं चन्द्रेण संपुक्तं रजः सूर्येण
संपुतम् द्रव्योः समरसैकतये
जानाति सयोगविन् ६४

जो शुक्लको चन्दूके साथ तथारजको

गो
शु
३६

सूर्यकेसाथरलावनाजानेगा ३६
योगीहोताहै ३५

प्रोथनेनाडिजालस्यचालनेचं।
दसूर्ययोः रसानां प्रोषणं चैव
महासुखाभिधीयते ३५
नाडिजालकासुहकरणा सूर्यच।

दृक्काचलाना रसोंकासुकाना म
हासुद्राकरलातीहै ६५

वतो न्यस्तहनुर्निपीड्यसचिरे
योनिचक्षामां विणा हस्ताभ्यां
मनुष्यारिते प्रसरिते पादे तया
दतिणाम् आसूर्यसुसनेन।

गो
श'
२३

कृतिप्रगल्लेवद्वासनोरेचये
रेषापातकनाशानीसमर
तीमुद्रानृणांप्रोच्यते ६६
ज्वातीपरविषुकशिवकेवामपाद
सेयोनीवन्धकरणादोनृणांमुंसे
दतिगणपादपकररविना दोनृणा॥

सेयवनसिभरणे तस्यात्वालीकरणे
रहीमहामुद्राकहलातीहे ६६
चन्द्रांगेनसमभ्याससूर्यांगेन
समभ्यासेन यावत्तस्याभवेत्से
त्यातावन्मुद्रांसमभ्यासेन
वेदाङ्गसेअभ्यासकरणानस्यासूर्या

गो० गमेर्वीजवतकसेत्वात्तस्य होवेतव
३२ तकमुद्राकाशभासकरणा ६०
नरिपय्यमयय्यवारसाः सर्वे
पिनोरसाः अपिभुक्तंविषंक्षोरं
पीपूषमिवजीर्यते ६८
सवरसनीरसहोनातेहं यथाअथा

शार्कीचाधीनपुहोतीहै ओरजहरा
वीत्वादाहोवेतो अमृतकेन्यापीपा
वजाताहै ६२
तयऊमुद्रावर्तगुल्माजीर्णा
पुरोगमाः तस्यदोषाः तयंया
तिमहामुद्रांचयोभ्यसेत्तक

गो
शं
२५

चित्ते ये महा मुद्रा महा सिद्धि
करी नृणां गोपनीया प्रय
त्नेन नदीया यस्य कस्यचित् ॥
तय ऊर्ध्वादि महा गोग महा मुद्रा ना
नने बाले को नष्ट होत है और रूम
हा मुद्रा ये से कै से ऊँ न देना गुप्त ॥

एना ॥
मुक्तासनं समाहृत समकाय
शिरोधरः नामाग्रदक्षिरेका
कीजये दोंकार मन्त्रायम् ॥
मुक्तासन परवेष्टकर शरीर और
सिरसी द्वार एव कर नामाग्रको दे।

गो
शं
धं

विनायकाग्रविमसे ओंकारकानि
पकरणा ॐ ॥

भूर्भुवःस्वरिमेलोकाष्टदसूर्या
ग्रिदेवताः यस्यमात्रासतिष्ठति
तत्परेज्योतिरोमिति ॐ

दृष्टीआकाशसर्गादिलोकगण

सूर्यचंद्रअग्निआदिकदेवतिसके
मात्राहंपरस्वरतेहै उहीपरमज्यो
तीस्वरूपओंकारहै ॐ ॥

इत्याक्रियातयाज्ञानेवात्मीरौ
दीववैस्सवी विधाशक्तिःशि
तायत्रतत्परेज्योतिरोमिति ॐ

क्रियाशक्ति तथा ब्रह्मीशक्ति से ही शक्ति वैसवी शक्ति उही तीन प्रकार की शक्ति है जिसका

गो
श
ध

स्वाशक्तितानशक्तियोंस्थित है ३।
ही परमज्योती ओंकार है ५१

अकारश्च उकारश्च मकारो वि
दसेतिकाः त्रिधामात्रास्थिता
यत्र तत्परं ज्योतिरोमिति ५४

अकार उकार विदुः इति तिस्रै रही।

तीन मात्र दहरे हैं उही परमज्योति ओं
कार है ५५

पुर्वित्वाप्यपुर्वित्वापि योजयेत्
एवं सदा लिप्यन्ते न स पापे न य
मप्यत्र मिवाभसा ५५

पुदहोपाअपुदहो जे ओंकार जे

मो.
श.
५२

उसको पमपत्र न्यायी पाप जल का
स्पर्श नहीं ५५

चले वायो चलें सर्व निश्चले निश्च
ले भवेत् योगी स्यात् त्वमामो।
तिलो वायुं निबन्धयेत् ५६

जव प्राण च चल होवे तव सव च चल

है उसके निश्चल होने से निश्चल है
अभासी पुरुष पर्वत के लिये निश्च
ल होता है उसी वास्ते प्राण को बान्धना
या वह्दायुः स्थितो देहे ताव जीवि
तमुच्यते मरणं तस्मान्निष्क्रामत्
ततो वायुं निबन्धयेत् ५७ ॥

गो
श.
५१

जवनक प्राण शरीर में है तवनक
जीवन है प्राण निकलना मरण को
करते हैं उसी वासने प्राण को वा-
न्यनावा है ५१ ॥

यावद्वहो मरुद्देहे तावद्वसिते
निराश्रये यवद्वहो ते दुर्बोर्मथे

तावद्वायुः प्रवृहति ५२ ॥
प्राणवान्धनेसे मन निश्चल होता
है भूमि पर चलनेसे प्राण जागता है ५२
यतः कालं भयाद्वाह्यं प्राणायाम
परायणः योगिनो मुनयश्चैव
ततः प्राणो निवन्धयेत् ५३ ॥

८०
गो.
श.
वध

ब्रह्मावीकालभयसे प्राणायामका
सेवनकर्ता है उस वासने योगी मंथा
मुनी को चोरे प्राणवान्धना २५

षड्विंशदंगुलेहंसः प्रमाणं क।
रुने वहिः वामरतिणमार्गं
ततः प्राणोभिधीयते २६

छती सञ्जुल प्रमाण वहिर को चार
कर्ता है वामरतिणमार्ग से उसी वा
सने प्राण कहते हैं २०

शुद्धिमेति यदा सर्वनाशि चक्रं
समाकुले तदैव जायते योगी
समः प्राण निवन्धने २१

गो.
श.
ध.

जवसारनाडीचक्रपुंढरोवे तवयो
गीप्राणवान्धनेकासमर्थहे ॥

वहपमासनोयोगीप्राणंचेदेण

पूरयेत् पूरयित्वायथाशक्तिश्च

यः सूर्येण च येत् ॥

पमासनवान्धकरप्राणकोयथाश

क्तिचंद्रनाडीसेपूरण पूरकरसूर्यना
डीसेफेररीचनाअर्थात् उतारणा ॥

अमृतोदधिसेकाशोत्तीरोदधव

लप्रभम् ध्यात्वाचाद्रमसेविसं

प्राणायामीसखीभवेत् ॥

अमृतन्यायीशीतलहृपकेन्यायी।

गो
शा
५२

चिदा चंद्रविस्वधानकरणे से प्राणा
भासी पुरुष सखी होवे २३

प्राणो सूर्येण वाक् कष्य पूरयेति
उपोदरम् ऊर्ध्वं चित्ता विधानेन
भूयश्चक्षुर्गारे च येन २४
अथ वा प्राणको सूर्य नाडी से खीचक

२ विधी से दृष्टा देना फेर चतुर्नाडी
से उत्तर लेना २५

प्रज्वलजलनज्वाला पुंजमारि
न्यमणलम ध्यात्वा नाभिस्थिते
योगी प्राणायामी सखी भवेत्
नाभिस्थान विषय सूर्य मणलप्या।

गो
शु
प

नकरप्राणायामीसखीलोवे कै
सासूर्यमणलजैसावरेअशिसेवा
शियोतीकृदनीहै ८५

प्राणोवेदिउयापिवनियमिते।
भूयोन्पयारेवयेत पीलापिंग
लयासमीरणमलवहात्यजे।

हामया सूर्याचनूमसोरनेनवि
धिनाविस्वहयंथावतां शुद्धा।
ताडिगणाभवन्तियमिनांसा।
सहयर्धनः ८६
नवप्राणकोइगनाडीसेनियमकर
पीलेवे थानकर्तारहिदोमहीनेत